राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 16.00 सख्या 88
केंचुली
नागराज
NAGRAJ DHRUVA
DOUBLE ACTION YEAR
1997
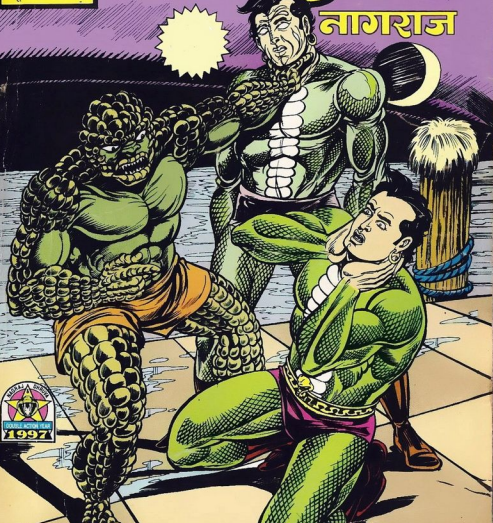
RAHUL
BOOK-5
नागराज और ध्रुव जैसे मानवता के रक्षक, मिस किलर, जादूगर शाकूरा, नागपाशा, नागदन्त, नागमणि, ग्रैंडमास्टर रोबो, ध्वनिराज, चुंबा, बौना वामन जैसे सुपर खलनायकों को एक बार नहीं, कई बार मात दे चुके हैं। लेकिन ये हीरो दूसरों को तो हरा सकते हैं, परन्तु ये कुछ भी नहीं कर सकते जब खुद उनका व्यक्तित्व ही उनका दुश्मन बन जाए। भला अपने आपको कौन हरा पाया है?
तू अपनी केंचुली को मारने के बजाए इसकी रक्षा करने की सोच, नागराज! क्योंकि इस पर पड़ने वाली हर चोट खुद तेरे शरीर पर ही पड़ेगी। और खत्म हो जाएगा तू खुद अगर खत्म हो गई यह...
आऽऽह
केंचुली
कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

महानगर में आने से पहले और बाद में नागराज की जिंदगी में कई उतार-चढ़ाव आए। नागपाशा के जरिए उसको अपने वंश के बारे में पता चला और भारती एवं वेदाचार्य जैसे पुराने वफादारों का साथ भी मिला–

वेदाचार्य ने ही नागराज के कुल का खज़ाना सुरक्षित रखने के लिए वह तिलिस्म रचा था, जिसके अंत में बैठकर कुलदेवता कालजयी उस खजाने की रक्षा करते थे। वेदाचार्य ने नागराज की सही पहचान करने के बाद उसे वह खजाना सौंप दिया। लेकिन महान ज्योतिषी वेदाचार्य को जो सवाल रह-रहकर सता रहा था, वह था कि नागराज के जीवन के शुरुआत के चालीस या पचास वर्षों तक नागराज कहां रहा?★

उनकी गणना, आखिरकार उनको एक गुप्त समुद्र की यात्रा पर नागद्वीप के पास तक ले गई जहां पर तांत्रिक विषंधर के वार से बेहोश होकर लहरों पर बहते-बहते वह नागद्वीप में महात्मा कालदूत तक जा पहुंचे। इधर वे नागराज का नाम और महानगर में उसका पता बताकर गहरी बेहोशी में चले गए–★

और महानगर में- उनका पता जानने के लिए भारती और नागराज बेचैन होकर इधर-उधर भटक रहे थे–

हम लोग आखिर जा कहां रहे हैं राज?
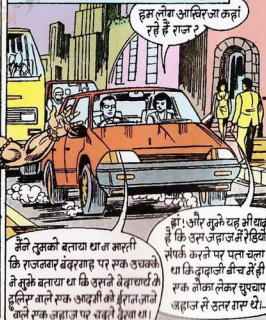
मैंने तुमको बताया था न भारती कि राजनगर बंदरगाह पर एक उचक्के ने मुझे बताया था कि उसने वेदाचार्य के हुलिए वाले एक आदमी को ईरान जाने वाले एक जहाज पर चढ़ते देखा था।

हां! और मुझे यह भी याद है कि उस जहाज में रेडियो संपर्क करने पर पता चला था कि दादाजी बीच में ही एक नौका लेकर चुपचाप जहाज से उतर गए थे।...

★यह सब जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित विशेषांक 'जहर' 'खजाना' 'क्राइम किंग'

लेकिन अब यहां पर क्या काम है?
वह जहाज अपनी यात्रा पूरी करके वापस आ गया है। उसके कैप्टेन से मिल-कर शायद हमको कुछ और ऐसी बात पता चल सके, जो हमको वेदाचार्य तक पहुंचा सके। आओ, मैंने कैप्टेन से एप्वाइंटमेंट ले रखा है!
लेकिन कैप्टेन शर्मा ने भारती को उम्मीद बांधने के बजाय उस पर गाज* गिरा दी-
वे आपके दादा थे? कमाल है, इतने वृद्ध इंसान से तो मैंने ऐसी हरकत की उम्मीद ही नहीं की थी कि वे बिना इजाजत एक नौका लेकर बीच समुद्र में उतर जाएंगे!
*गाज = बिजली
वह तो हमको अगले दिन सुबह उनके सहयात्री से पता चला कि वे रात से गायब हैं। जांच करने पर एक नौका भी गायब पाई गई। वे जहां पर उतरे हैं, उसके आस-पास तो क्या, दूर-दूर तक भी कोई ज्ञात द्वीप नहीं है।
और वह इलाका शार्कों और पथरीली चट्टानों से भरा हुआ है। आपके दादा का तो तभी बच पाना मुश्किल था। और अगर अब तक उनकी कोई खबर नहीं मिली है तो फिर आप उनको जिन्दा देखने की उम्मीद छोड़ ही दें।
भारती के सब्र का बांध टूट गया-
ओफ़! आपने ऐसा क्यों किया दादाजी? सुबुक!
भारती! रुको... सुनो तो...
लेकिन भारती रोते हुए बाहर चली गई-
कैप्टेन, क्या आप मुझे उस जगह की सही स्थिति बता सकते हैं, जहां पर वेदाचार्य नौका लेकर उतर गए थे!
क्यों नहीं? वह जगह तो मुझे आज भी जुबानी याद है। अभी नक्शे पर निशान लगाकर बता देता हूं।

कैप्टेन द्वारा नक्शे पर निशान लगाते ही नागराज की चश्में के पीछे छुपी आंखें चमक उठीं-
अरे! वेदाचार्य तो नागद्वीप से कुछ ही मील की दूरी पर उतरे हैं।
अब उनका पता लगाना ज्यादा मुश्किल काम नहीं है।
धन्यवाद कैप्टेन! आपने हमारी बहुत मदद की!
धन्यवाद किसलिए? मैंने आपको कोई खुशखबरी तो दी नहीं है!
भारती को उदासी ने घेरा हुआ था-
अब हम दादाजी को कभी नहीं देख पाएंगे राज! कभी नहीं... सुबुक!
दादाजी को हम जरूर देखेंगे और जल्दी ही देखेंगे। यह झूठी तसल्ली नहीं, बल्कि मेरा वादा है भारती!
सच कह रहे हो न राज? तुम तो वैसे भी असंभव को संभव बना सकते हो अगर तुम कह रहे हो...
भारती की यह खुशी ज्यादा देर तक कायम रहने वाली नहीं थी-

क्योंकि अगले ही पल- उस खुशी का स्थान...
अरे!
... भय ने ले लिया-
गड़ाक
भारती!
भारती को किसी चीज ने पानी के अन्दर खींच लिया है!
... वैसे भी भारती को बचाने डरपोक राज नहीं, बल्कि नागराज जाएगा।
और जल्दी ही- भारती को बचाने के लिए पानी में कूदा नागराज...
भारती को बचाने के लिए मुझे पानी में कूदना होगा। और राज के कोट-पैंट इस काम में बाधक बन सकते हैं!...
नागराज ने रूप बदलने में कुछ ही पलों का वक्त लिया-
छप
... लहरों के बीच में भारती और उसके हमलावर की तलाश कर रहा था-

नागराज को भारती को ढूंढने में तो ज्यादा वक्त नहीं लगा। लेकिन उसको बचाने में नागराज को वक्त जरूर लगना था-
क्योंकि भारती को पानी के अन्दर खींच ले जाने वाली आकृति भयावह होने के साथ-साथ भारती के खून की प्यासी भी लग रही थी-
यह क्या चीज है? मगरमच्छ और इंसान का मिला-जुला रूप! ...
... लेकिन यह आया कहां से? आज तक तो ऐसी चीज के बारे में मैंने कभी नहीं सुना!

खैर! अभी आश्चर्य में डूबे रहने का वक्त नहीं हैं। वर्ना यह भारती को नोंच कर खा जाएगा!
मेरी विष फुंकार पानी के अन्दर उतनी असरकारक साबित नहीं होगी। क्योंकि पानी में घुलकर वह लगभग निष्क्रिय हो जाएगी।...
...वैसे भी इसको बेहोश करने का काम तो मेरी शारीरिक शक्ति ही कर देगी।
अपने शरीर में अनगिनत सांपों की शक्ति लिए नागराज, उस प्राणी की तरफ लपका-
और अगले ही पल- उसका शरीर पानी में उछलकर उल्टी तरफ तैरने लगा-
आह! इसके शरीर में तो अमानवीय शक्ति है। मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था।...
... कि यह मगरमच्छ और मानव का संयुक्त रूप है। और पानी के अन्दर मगर की ताकत कई गुना बढ़ जाती है...
... अभी मुझे इससे लड़ना नहीं है। मेरा पहला काम भारती को इस दरिन्दे के चंगुल से आज़ाद करवाना है।...
...और यह काम मेरे शरीर में वास करने वाले 'जलसर्प' आसानी से कर सकते हैं। हांलाकि ऐसे सर्प मेरे शरीर में ज्यादा नहीं हैं लेकिन फिर भी इतने जरूर हैं कि मेरा काम कर दें...

उस प्राणी ने सांपों द्वारा हमले की उम्मीद नहीं की थी-
वह इस एकाएक हुए हमले से हड़बड़ा उठा। और भारती का शरीर उसके हाथों से छूट गया-
और नागराज ने उसे संभालने में एक पल भी नहीं खोया-
मेरे फेफड़ों में ऑक्सीजन खत्म हो रही है। भारती का भी यही हाल होगा। मुझे उसे लेकर तुरन्त सतह पर पहुंचना चाहिए।
नागराज ने भारती को सुरक्षित जमीन तक पहुंचा दिया-
भारती की हालत ठीक नहीं है। इसे लेकर तुरन्त अस्पताल जाना होगा।... यानी अब वह प्राणी बच निकलेगा। क्योंकि मैं उसके पीछे नहीं जा पाऊंगा।...
क्योंकि अगले ही पल उसको पानी के अन्दर खींच लिया गया-
ओह!
इसने मेरे सांपों को खा लिया है। मुझे पहले ही समझ लेना चाहिए था कि सांप भी मगरमच्छ का भोजन होते हैं।
नागराज यह नहीं जानता था कि उस प्राणी के पीछे जाने या न जाने का निर्णय उसके हाथ में नहीं था-

मैं इसको मारना नहीं चाहता, क्योंकि यह शायद अपनी तरह का अकेला प्राणी है। वैसे भी मेरे दांत इसकी मोटी खाल में शायद धंस नहीं पाएंगे...
... लेकिन अगर इसने मुझे खाने की कोशिश की, तो भी यह मर जाएगा। मुझे इसको ऐसा करने से भी रोकना होगा। पर ऐसे मैं इसको रोक नहीं सकता!
क्योंकि जल्दी ही कोई न कोई जोरदार वार मेरा सिर घुमाकर रख देगा!...
... कोई न कोई रास्ता जल्दी ही तलाशना पड़ेगा।
वाह! यह रहा रास्ता! किसी छोटे जहाज के लंगर की चेन!
यह प्राणी चाहे जितना शक्तिशाली हो लेकिन फिर भी एक बात का मुझे पूरा भरोसा है...
... कि यह लंगर की मोटी चेन को नहीं तोड़ सकता है। अब मैं इसको यहीं चेन में फंसा छोड़कर आराम से जा सकता हूं।
ताकि भारती को अस्पताल में छोड़कर फिर वापस इसको लेने आ सकूं!

नागराज ने राज के रूप में बदलकर भारती को अस्पताल पहुंचाने में ज्यादा वक्त नहीं लगाया-
मिस भारती को कुछ खराशों के अलावा कुछ खास चोटें तो नहीं आई हैं मिस्टर राज! लेकिन समुद्र का काफी सारा गन्दा पानी पी लेने और इन खराशों में इंफेक्शन हो जाने के कारण ये बेहोश हो गई हैं। शायद इनको हल्का सा शॉक भी लगा है। खतरे की तो कोई बात नहीं है, लेकिन इनको पूरी तरह से ठीक होने में दो-तीन दिनों का वक्त तो लग ही जाएगा!
ओह! तब तो भारती जी के कई सारे दूसरे कामों को भी मुझे ही संभालना होगा डॉक्टर!
और इसका मतलब यह भी हुआ कि अब मैं उस प्राणी को पकड़ने के लिए तुरन्त वापस नहीं जा पाऊंगा!
क्योंकि वह अंजाने में एक बहुत बड़ी गलती कर गया था-
वह उस मगर-मानव को उसी शिप के लंगर की चेन में बांध गया था, जिस शिप पर उसे जाना था-
ओह! तो तू बंधा था लंगर में म्याराहा! मैं सोच ही रहा था कि लंगर में आखिर क्या फंस गया है?
पर तू वहां पर पहुंचा कैसे?
नागराज अगर वापस जा भी पाता तो भी खाली हाथ ही वापस आता-

गराहा के मुंह से कहानी सुनते ही उस शिप पर एक तूफान सा आ गया-
क्या? तू किनारे के पास गया था! इंसान का मांस खाने की हवस दबाई नहीं गई तुझसे!
तुझसे मैंने कहा था न कि तू बगैर मेरे हुक्म के किनारे पर नहीं जाएगा! तूने जुलू के हुक्म की हुक्मउदूली की है!
और तू अच्छी तरह से जानता है कि मेरे हुक्म को न मानने का क्या नतीजा होता है!
नहीं! नहीं! ये मत करो!
मुझे माफ कर दो!
पहले सजा झेल ले! और उसके बाद अगर माफी मांगने की हालत में हो तो मांग लेना।
आऽऽऽई!
माफ... कर दो! अब ऐसा कभी नहीं करूंगा!
ठीक है! पहली गलती को माफ कर दे रहा हूं। लेकिन अपने कान साफ करके सुन ले! तुझको मैं अभी जिस काम पर भेजने वाला हूं, उसमें अगर तू असफल होकर लौटा तो तेरा हाल इससे भी बुरा कर दूंगा!

जुलू के मस्तिष्क में विचारों की आंधियां दौड़ रही थीं-

इस मूर्ख को भी किनारे पर जाकर नागराज से ही टकराना था! वैसे भी, यह तो मुझे पता ही था कि अगर मुझे महानगर में आकर कोई कारनामा करना है तो मुझे नागराज से टकराना ही पड़ेगा! इसलिए मैंने नागराज पर उपलब्ध सारी जानकारियों को ध्यान से पढ़कर अपने दिमाग में बिठा लिया था!

और उससे मुझे नागराज को अपने काबू में करने का एक ऐसा रास्ता मिल गया है, जिससे नागराज हमेशा के लिए मेरा गुलाम बन जाएगा!

लेकिन यह काम मुझे अब बहुत जल्दी करना पड़ेगा। वर्ना मेरे गुलाम बना पाने से पहले नागराज मेरा ही कबाड़ा कर देगा!

अब मुझे योजना बहुत सोच-समझकर बनानी पड़ेगी। एक तरफ तो मुझे मगराहा व नागराज की अब होने वाली टक्कर में नागराज से मगराहा को बचा-कर यहां लाना है और दूसरी तरफ नागराज से मुझे वह चीज भी हासिल करनी है, जो नागराज को मेरे हाथों में खेलने पर मजबूर कर देगी।

नागराज को खुद मगराहा तक पहुंचने की जल्दी थी। लेकिन भारती की तबीयत ने उसे अस्पताल में ही रोक रखा था-

डॉक्टर बासु! मैं आपको ही ढूंढ रहा था। भारतीजी की खून की जांच की रिपोर्ट आ गई है! जरा इसको देखकर बताइए तो कि...

एक मिनट राज! अभी मैं बहुत जरूरी काम से पांचवीं मंजिल पर जा रहा हूं। लौटकर देखूंगा! ...

... वैसे तुम भी मेरे साथ क्यों नहीं चलते! इस हॉस्पीटल में एक ऐसी चीज की खोज हुई है जो शायद एक दिन मुर्दे में भी जान डाल दे!

ऐसा!

चलिए, शायद उस चीज पर हम कोई टी॰वी॰ प्रोग्राम बना सकें!

और फिर- दूसरी मंजिल से पांचवीं मंजिल पहुंचने पर-
आओ राज! इस पूरी मंजिल पर हमारा 'रिसर्च एंड डेवलपमेंट डिपार्टमेंट' है।
H& DEVELOPEMENT
NO ENTRY
यहां पर तो मुझे हल्की सी ठंड लग रही है।
हा हा! दरअसल जीव विज्ञान से संबंधित कोई भी शोधकार्य, ठंड में ही करना ज्यादा अच्छा होता है राज!...

...और अभी तो हमारे इस डिपार्टमेंट में दस वर्षों के शोध कार्य के बाद, एक ऐसी खोज हुई है, जो पूरी दुनिया में हलचल मचा देगी।
यह तो एक छोटा सा विद्यार्थी भी जानता है कि हर जीवित प्राणी का शरीर कोशिकाओं से मिलकर बनता है...

...और हर कोशिका के अन्दर एक खास पदार्थ मिलता है, जिसको 'लिविंग मैटर' कहते हैं। इसका नाम प्रोटो प्लाज्म या प्लाज्मा है।

यह 'प्लाज्मा' जीवित पदार्थों के अन्दर ही मिलता है। और कई वैज्ञानिकों के अनुसार जीवन का आधार यही 'प्लाज्मा' है।
LAB AREA
प्रवेश निषेध
अब तक 'प्लाज्मा' को जीवित कोशिकाओं से अलग करने के सारे प्रयास बेकार हो चुके थे।...

...लेकिन ये देखो! हमने 'प्लाज्मा' को जीवित कोशिकाओं से अलग करने में सफलता प्राप्त कर ली है!
वाह! कमाल है!

इसको इस रूप में बनाए रखने का सिर्फ एक ही तरीका है कि इसको शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्र में रखा जाए। इसीलिए हमने इसको इन दोनों चुंबकों के बीच में रखा हुआ है...
... अब अगर हम इसका सही तरीके से इस्तेमाल कर सकें तो इसकी मदद से हम मृत चीजों में भी जान डाल सकते हैं...
... लेकिन वह तरीका क्या है यह हम अभी तक नहीं जानते! शायद अगले कुछ सालों में हम यह पता भी लगा सकें।
वैसे तो इस खोज की रिपोर्ट सारी दुनिया के 'मेडिकल जर्नलों' में छप चुकी है राज...
आप लोगों ने तो भारत का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। लेकिन अभी तक इस महान उपलब्धि का जिक्र न तो समाचार पत्रों में आया और न ही किसी और संचार माध्य पर! ऐसा क्यों डॉक्टर बासु?
... लेकिन प्रेस को अभी हमने खबर नहीं की थी। क्योंकि बाकी दुनि के वैज्ञानिक हमारे दावे को परखना चाहते थे। एक-दो दिनों में हम एक प्रेस कांफ्रेंस बुलाने जा रहे हैं।
सबसे पहला इंटरव्यू 'भारती चैनेल' को ही मिलना चाहिए डॉक्टर बासु!
जरूर राज! यह मेरा वादा है!
तो फिर अभी मैं चलता हूं। कुछ जरूरी काम निबटाकर थोड़ी देर में वापस आ जाऊंगा!
जरूर राज!
नागराज ने बंदरगाह की तरफ रवाना होने में एक पल भी नहीं गंवाया—
मुझे अस्पताल में काफी वक्त लग गया। कहीं इतनी देर में वह प्राणी चेन खोलकर आजाद न हो गया हो।
CITY HO
अस्पताल से दूर जाता नागराज अगर सड़क के रास्ते से जाता तो शायद उसे बंदरगाह तक जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती—

★ बहुमंजिली इमारतों में ताजी हवा आने-जाने के लिए इमारत के बीच-बीच में लिफ्ट के रास्ते जैसी पतली जगहें छोड़ी जाती हैं। इनको ही 'शूट' या 'शाफ्ट' कहते हैं।

कहानी 19वें पृष्ठ से जा

घबराओ मत! मैं तुम्हारी मदद के लिए
या हूं। अंदर एक भयंकर प्राणी तोड़-फोड़
र रही है। और उसको सिर्फ इन छड़ियों
की मदद से रोका जा सकता है!
इन छड़ियों से! ये छड़ियां ऐसा क्या कर सकती हैं, जो हमारी रिवॉल्वरों की गोलियां नहीं कर सकतीं!
तुम खुद ही इनको पकड़ कर देख लो!
इनको पकड़ते ही तुम लोगों को अपने शरीर से ऊर्जा का संचार होता महसूस होगा!
देखें!
ओह! माफ करना! मैं तुम लोगों को यह बताना भूल गया कि वह ऊर्जा विद्युत ऊर्जा होगी। जिससे तुमको ऐसा झटका लगेगा कि तुम दो घंटे तक होश में नहीं आ पाओगे!
दोनों अब मेरे काम में
कावट नहीं डाल पाएंगे!
ब देखूं कि मगराहा क्या
कर रहा है?
मगराहा अपना आतंक फैला चुका था-
बोल कहां है प्लाज्मा?

इससे पूछने की अब कोई जरूरत नहीं है मगराहा! 'प्लाज्मा' मैं खुद ही ले लूंगा!
जा! जाकर सो जा!
धाड़
अपने कपड़े वापस पहन लो!
इससे पहले कि किसी को कुछ पता लगे, हम यहां से निकल लें!
जुलू लपककर, अभी तक रुकी हुई लिफ्ट में घुस गया-
जल्दी आ, सुस्त!
लेकिन मगराहा लिफ्ट में नहीं घुस पाया-
गर्दन पर आ कर एक फंदे ने उसके कदमों को वहीं पर रोक दिया-
सर्ररर्र
सांपों का फंदा! यानी नागराज यहां पर आ चुका है! यहां पर रुकना अब ठीक नहीं है!
वैसे भी मगराहा जानता है कि अगर नागराज से सामना हो जाए तो उसको क्या करना है!

गराज ने ठीक वक्त पर, घटनास्थल पर पहुंचकर लिफ्ट बंद होते हुए तो देखा था, लेकिन वह यह नहीं समझ पाया था कि लिफ्ट में उसका दुश्मन भाग रहा है–
अच्छा हुआ कि बंदरगाह जाते वक्त, मैंने अपने राज वाले कपड़े अस्पताल की छत पर ही छोड़ दिए थे। वर्ना न मैं यहां पर वापस आता और न ही मुझे पता चलता कि जिसकी तलाश में मैं समुद्र की गहराइयां छान रहा था वह यहीं पर आया हुआ था। पर यह यहां पर आया क्यों?
घम्मम्मम्मम
...नों डॉक्टर बेहोश हैं। वर्ना यही मुझे... ह! 'प्लाज्मा' गायब है। जरूर यह यहां पर लाज्मा' के लिए आया होगा। पर 'प्लाज्मा' इसके पास भी कहीं नजर नहीं आ रहा है। आखिर 'प्लाज्मा' गया...
आह!
इसको पकड़ने की जल्दी में तो मैं यह भूल ही गया था कि सांप इसका भोजन है!...
...यह आजाद हो गया है। अब मुझे भयंकर लड़ाई की आशंका है। इसी लिए इसको लैब के बाहर ले जाना होगा...
धाड़
...ताकि यहां पर तोड़-फोड़ न हो!
नागराज को चलकर बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ी-

क्योंकि मगराहा के उस शक्तिशाली वार ने उसको हवा में उड़ाकर बाहर फेंक दिया-
आह! पानी से बाहर रहने पर भी इसकी ताकत में कोई फर्क नहीं पड़ा है। वैसे तो मैं इसको पलभर में जान से खत्म कर सकता हूं, लेकिन अभी मुझे इससे 'प्लाज़्मा' का पता पूछना है।...
धम्म्म्म्मांक
... इसलिए इसको बिना मारे या बेहोश किए काबू में करना होगा।...
... यह फिर मेरी तरफ ही आ रहा है। इस बार इसको... अरे!
... यह तो भाग रहा है! सीढ़ियों की तरफ से जा रहा है।...
... मुझे इसको भागने से रोकना होगा!
नागराज की कलाई से एक बार फिर सर्प रस्सी निकली-
और भागते मगराहा के पैर से जा लिपटी-
मगराहा अपना संतुलन खोकर रेलिंग से नीचे जा गिरा-
आऽऽऽऽ
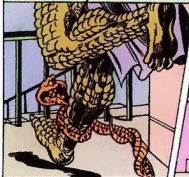
ओह! यह क्या हो गया? अब तो यह सीढ़ियों के बीच से गिरता हुआ सीधे, 'ग्राउंड फ्लोर' पर जाकर ही रुकेगा!...
...और इतनी ऊंचाई से गिरकर कोई बच नहीं सकता!
क्योंकि लड़खड़ाता हुआ मगराहा अपने पैरों पर खड़ा हो रहा था–
नागराज की सोच को अभी एक करारा झटका लगना बाकी था–
कमाल है! इसकी शक्ति को मैंने बहुत कम आंका था। अब मैं इस पर अपनी शक्तियों का प्रयोग करने से नहीं हिचकूंगा।
सीढ़ी की रेलिंग पर, सांप की तरह चिपका हुआ नागराज, नीचे की तरफ लहरा गया–
जुलू अभी तक अस्पताल में ही था–
मगराहा ऊपर से गिर-कर घायल हो गया है। इस स्थिति में नागराज इसको यहीं पर दबोच लेगा।
मैं ऐसा नहीं होने दे सकता।...
...मुझे यहीं रुककर चुपचाप मगराहा की मदद करनी होगी।

नागराज ने मगराहा को ज्यादा दूर तक नहीं जाने दिया–
लेकिन नागराज के इस हमले से मगराहा
नुकसान पहुंचने के बजाय, फायदा ही हु
धाड़.
क्योंकि नीचे फिसलकर आने की गति के कारण, नागराज का वह वार मगराहा को इतनी तेजी से लगा...
...कि शीशे का दरवाजा तोड़ता हुआ मगराहा बाहर बने फव्वारे में जा गिरा–
और पानी से स्पर्श होते ही मगराहा
शरीर तेजी से अपने-आपको फिर से
स्वस्थ करने लगा–
नागराज का अगला वार होने तक मगराहा की शक्ति लगभग पूरी वापस लौट चुकी थी–
धड़ाक

नी ने इसकी खोई शक्ति को फिर वापस कर दिया है। अब इसको बेहोश रना ही पड़ेगा। और उसके लिए षफुंकार की एक हल्की सी राक इसके लिए काफी होगी।
नागराज और मगराहा की इस मुठभेड़ को देखने के लिए अब तक भीड़ जमा हो चुकी थी–
र इस भीड़ में नू भी शामिल था–
वैसे तो मुझे इस स्थिति की आशंका थी, और मैंने मगराहा की नाक में एक 'फिल्टर' फिट कर दिया था। लेकिन वह विषफुंकार के असर को सिर्फ कम कर पाएगा खत्म नहीं!
के मगराहा की द करनी होगी...
नागराज की खाल सांपों की खाल जैसी है। और मेरे बनाए हुए इस कैमिकल स्प्रे से सांपों को बहुत तेज एलर्जी होती है।
स्प्रे की फुहार को कोई देख नहीं सका–
किन उसका असर लगभग न्त ही सामने आ गया–
आह! एकाएक मेरे शरीर में बहुत तेज जलन होने लगी है।
नक हुई इस तेज जलन गराज से सोचने-समझने की क्षमता छीन ली–

और वह मगराहा को भूलकर खुद फव्वारे में कूद पड़ा–
छपाक
आह! शायद इस पानी से मेरे शरीर की जलन में कुछ आराम पड़ सके।
नागराज की जलन से आराम तो तुरंत मिलने लगा, क्योंकि पानी उसके शरीर पर पड़े केमिकल को धो रहा था–
आह! न जाने मुझे एकाएक क्या हो गया था?
लेकिन इस व्यवधान ने मगराहा को भागने का मौका दे दिया था–
अरे! वह भाग रहा है। मेरे शरीर की जलन अभी खत्म नहीं हुई है। लेकिन मैं इसको भागने नहीं दे सकता। मुझे पानी से बाहर निकलना होगा।
नागराज उसी हालत में, सुनसान सड़क पर विद्युत गति से भागते मगराहा के पीछे लग गया–
और यह दृश्य देखकर जुलू मुस्करा उठा–
वाह! अब मगराहा, नागराज को वहीं पर ले जाएगा, जहां पर नागराज को गुलाम बनाने की प्रक्रिया का पहला भाग पूरा किया जाएगा। मुझे भी वहीं पर पहुंचना चाहिए!

अस्पताल से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर-
टूटी सड़क की मरम्मत कर रहे मजदूरों में खलबली मच गई-
रामदीन! फेंक तारकोल का डिब्बा! और भाग!
क्यों? क्या हो गया?
उधर देख!
आगे न कुछ बोलने की जरूरत पड़ी और न ही सुनने की। सारे मजदूर सिर पर पाँव रखकर भाग खड़े हुए-
लेकिन मगराहा का दौड़ना, वहीं पर रुक गया-
अब यह भाग नहीं रहा है। रुक गया है।
यह मेरा इंतजार कर रहा है। पर क्यों?
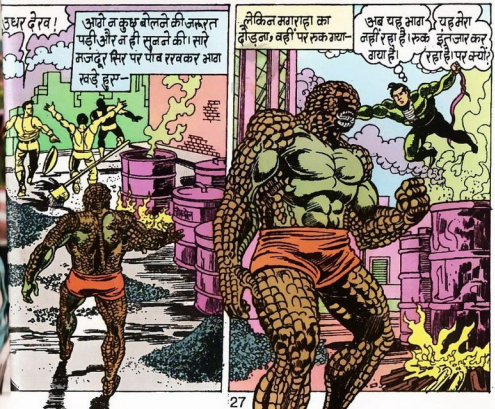
नागराज, अगर जरा सा और सतर्क होता तो उसे मगराहा के इरादे का पता चल जाता—

क्योंकि उसके पैर जमीन से छूते ही, मगराहा के हाथ घूम गए—

हे भगवान! यह तुम्र पर पिघले कोलतार से भरा ड्रम फेंक रहा है।

STOP

नागराज कोलतार से बचने के लिए एक तरफ लपका तो जरू

लेकिन फिर भी गर्म कोलतार ने उसके आधे शरीर को भिगो ही डाला—

नागराज चीख उठा—

आहह!

कोलतार ने मेरे शरीर को झुलसा डाला है।

...अब यह मेरे शरीर पर सूखकर मुझे एक खोल में कैद कर रहा है।

लेकिन चूंकि यह हवा में उड़कर फैलने के बाद मुझ पर गिरा है इसलिए यह इतना गर्म नहीं रह गया था! वर्ना शायद मैं जिंदा ही न बच पाता...

मैं कुछ देख भी नहीं पा रहा हूं और न ही अपने हाथों का इस्तेमाल कर पा रहा हूं मुझे इस कैद से बाहर निकलना होगा।

और इस कैद से तुरंत बाहर निकलने का सिर्फ यही रास्ता है...

... कि मैं अपनी केंचुली छोड़ दूं! ठीक उसी तरह जैसे तब छोड़ी थी, जब मिस किलर ने मुझे मकड़े के जाल में चिपका लिया था! ★
वैसे भी मेरी यह खाल कोलतार गिरने से जल चुकी है!...
स्वर्र्र
★ पढ़ें- नागराज का अन्त-
... लेकिन मैं एक बड़ा खतरा मोल ले रहा हूं। अभी मुझे केंचुली बदले हुए ज्यादा वक्त नहीं हुआ है। और मैं यह नहीं जानता कि इतनी जल्दी दुबारा केंचुली बदलने का मुझ पर क्या असर होगा!
खैर! अब यह सोचने का वक्त नहीं है। अगर मैंने अभी केंचुली नहीं बदली, तो वह मगरा-मानव बचकर निकल भागेगा। और मैं ऐसा नहीं होने दे सकता!
हा हा! ठीक वही किया तूने नागराज, जैसा मैंने सोचा था!...
...और अब तू अपनी केंचुली को यहीं पर छोड़कर मगराहा के पीछे जाएगा!...

सुषुप्तावस्था = सांप अपनी केंचुली छोड़ने के बाद एक लंबी निद्रा में चले जाते हैं। इस अवस्था को सुषुप्तावस्था कहते हैं।

किन नागराज उसका पीछा करने के लिए गटर में नहीं पाया। क्योंकि वह भी लड़खड़ाकर वहीं पर गिर गया
आह !
अब जुलू को न कोई देखने वाला था और न ही रोकने वाला-
हाहा ! हो गया काम। अब यह केंचुली अपने ही मालिक को जुलू का गुलाम बना देगी।
और फिर... नागराज मेरे लिए काम करेगा !
मुझे वापस शिप पर जाना चाहिए, जहां की लैब में मैं इस केंचुली 'प्लाज्मा' की मदद से जीवित प्राणी का निर्माण करूंगा !...
...नागराज के बारे में मुझे चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वह देर-सवेर शिप तक पहुंच ही जाएगा।
सुबह का सूरज निकल चुका था-
और भारती की तबीयत भी काफी सुधर चुकी थी-
और फिर मिस्टर राज आपको यहां पर छोड़कर किसी जरूरी काम से चले गए।
किसी जरूरी काम से?
ओह, समझी ! जरूर कल रात कुछ गड़बड़ हुई होगी। राज उसी की वजह से गए होंगे।
गड़बड़ तो कल रात यहीं पर हुई थी। नागराज की एक मगर-मानव से लड़ाई हुई थी।

★ तीमारदार = मरीज की सेवा करने वाला—

र दूसरी तरफ- समुद्र में तैरती एक छोटी शिप पर नागराज की केंचुली से एक पुतला तैयार किया जा रहा था-

आहा! डीजल से कोलतार को धो देने के बाद केंचुली चमक गई है। अब सबसे पहले इस खाल को जरूरी चीजों से भरकर इसमें 'प्लाज्मा' का जार फिट करना होगा...

दिन बीता- सूरज एक बार फिर क्षितिज से नीचे गिरने लगा-

... फिर उसके बाद यह पुतला मेरे इशारों पर नाचेगा, और नागराज इसके इशारों पर।

और
महानगर को अंधकार अपने आगोश में जकड़ने लगा-

★ओ॰बी॰वैन= आउट साइड ब्रॉड कास्टिंग वैन यानी बाहर से भी प्रसारण कर सकने वाली वैन
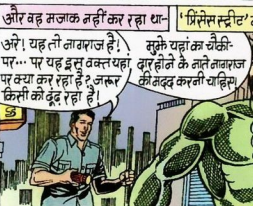
नागराज जी, क्या मैं आपकी कोई मदद...
चौकीदार की आंखों में पहले तो आश्चर्य उभरा-
JEWELLERS
और फिर भय-
लेकिन सिर्फ एक पल के लिए-
क्योंकि उसके बाद वह अपने होश ही खो बैठा था-
तड़ाक
आह
केंचुली, अपने मिशन पर निकल चुका था-
नागराज को गुलाम बनाने की कुटिल स्कीम की शुरुआत हो चुकी थी-
कड़ड़ड़ड़ड़
'ज्वेलरी शॉप' की 'शोविण्डो' के बुलेटप्रूफ शीशे को एक ही घूंसे से तोड़कर गहने निकालने के साथ-
रती कम्युनिकेशन्स की न्यूज वैन वक्त घटनास्थल पर पहुंची-
ओ माई गॉड! यह तो नागराज लग रहा है! और यह ज्वेलरी शॉप से गहने चुरा रहा है!
यानी हमको सही खबर मिली थी निशा!
कैमरा चालू करो। हम इसका सीधा प्रसारण करेंगे!

'प्रिंसेस स्ट्रीट' की दुकानों में सुरक्षा-व्यवस्था जबरदस्त थी–

शो विंडो का शीशा टूटते ही नजदीक के पुलिस स्टेशन में अलार्म बज उठा–

यह अलार्म कैसा है?

'प्रिंसेस-स्ट्रीट' पर 'लालवानी ज्वेलर्स' की दुकान में किसी ने घुसने की कोशिश की है। वहां पर तुरन्त फोर्स भेजनी होगी सर!

मैं खुद पुलिस फोर्स का स्पेशल दस्ता लेकर वहां जा रहा हूं!

और अस्पताल में- भारती नागराज के बगल में बैठी हुई बोर हो रही थी–

नागराज तो सोता ह जा रहा है। पूरा दिन वि गया। जरा 'भारती चैन लगाकर देखा जाए वि क्या।

अरे! यह तो निशा है। कहां की न्यूज कवर कर रही है ये?

'भारती न्यूज' का ये सीधा प्रसारण आपके पास प्रिंसेस-स्ट्रीट से आ रहा है। जहां पर नागराज एक ज्वेलरी शो केस का शीशा तोड़कर गहने निकाल रहा है। इन सभी दुकानों का एक-एक इमर्जेंसी अलार्म पुलिस स्टेशन में लगा है। वह जरूर बज चुका होगा। लेकिन पुलिस अब तक यहां नहीं पहुंची है।

असंभव नागराज तो य पर सोया हुआ जरूर कोई ना राज को बदना करने की कोशि कर रहा है। इस मुझे रोकना हो

भारती का घर अस्पताल से ज्यादा दूरी पर नहीं था। कुछ ही देर में भारती अपने घर पहुंच चुकी थी-
मम्मी-पापा की मुझे धुंधली सी याद है। वे दोनों एक साथ कैसे मरे, यह तो दादाजी ने मुझे कभी नहीं बताया।
पर मुझे इतना जरूर याद है कि उनकी मौत के बाद दादाजी ने मुझको छुटपन से ही हर तरह की लड़ाई की ट्रेनिंग दिलवानी शुरू कर दी थी।...
...और उस ट्रेनिंग में पारंगत हो जाने के बाद उन्होंने मेरे लिए एक खास पोशाक डिजाइन की थी...
...और मुझे एक खास नाम दिया था...
...फेसलेस! ताकि किसी मुसीबत के वक्त, मैं अपनी पहचान को गुप्त रखकर दुश्मनों का मुकाबला कर सकूं। इस रूप का इस्तेमाल मैंने नागपाशा के अड्डे में घुसने के लिए किया था...
...और आज इसका इस्तेमाल मैं नागराज के नाम को बचाने के लिए करूंगी!
★ पढ़ें: शाकूरा का चक्रव्यूह
लेकिन फेसलेस के घटनास्थल पर पहुंच पाने से पहले पुलिस की स्पेशल टॉस्क फोर्स प्रिंसेस स्ट्रीट पहुंच चुकी थी-
JEWELLERS
कमाल है! इसने गहने तो शो-केस तोड़कर निकाल लिए हैं। लेकिन यह भागने की कोशिश नहीं कर रहा है। पकड़ लो इसको!
आदेश मिलते ही पुलिस के जवान 'नागराज' पर टूट पड़े-
आह! पकड़ लिया सर!
पर... पर ये तो नागराज लगता है!
नागराज!

हां, सर! आप खुद देख लीजिए।
ये... ये नागराज नहीं है। कोई... मेरा मतलब... कुछ और है।
पकड़ लो इसको।
सभी ने मिलकर 'केंचुली' को दबोचने की कोशिश की-
और वे सफल भी हो गए-
लेकिन सिर्फ एक पल के लिए-
आह! इसमें तो गजब की ताकत है!
जुलू भी यह सीधा प्रसारण देख रहा था-
चलो! परम्परा के अनुसार पुलिस तो आ गई। अब नागराज भी

लू यह नहीं जानता था कि नागराज
सुप्तावस्था में था–
किन कोई और घटनास्थल की तरफ बढ़ रहा था–
जहां पर केंचुली सिपाहियों को हथियार उठा पाने तक का मौका नहीं दे रहा था–
हे भगवान! हे भगवान! मैं मर जाऊंगा। मेरा खोपड़ा खुल जाएगा!
अरे! अरे! मेरी तरफ क्यों आ रहा है! मुझसे टकराकर मुझे भी मरवाएगा क्या?
केन दोनों सिपाहियों के शरीर आपस
करा पाने से पहले ही एक शरीर की
में ही रोक लिया गया–
अरे! कौन हो तुम? दोस्त या दुश्मन?
खाकी वर्दी जब तक कानून की हद में रहे, तब तक मैं उसका दोस्त हूं...

...और जो भी कानून की हद से बाहर जाएगा, वह फेसलेस का दुश्मन होगा! हांलाकि इससे मेरी दुश्मनी की वजह कुछ और ही है!

इधर मिस्टर केंचुली युद्धशास्त्र की हर कला में पारंगत फेसलेस की किक खाकर लड़खड़ाया–

ताड़.

प्रिंसेस स्ट्रीट पर लड़ाई जारी थी

अगर ये नकाबपोश एक सेकंड के लिए भी दूर हो जाए तो इस नागराज का बदन छलनी कर दूं!

फेसलेस के एक सटीक वार से मिस्टर केंचुली दूर जाकर गिरा-
उफ्फ!
तड़ाक
और उसी पल, कई बन्दूकें एक साथ गरज उठीं-
मिस्टर केंचुली पर तो इसका कोई खास असर नहीं हुआ...
तड़तड़तड़तड़तड़
...क्योंकि मरे हुए को भला कौन मार सकता है-
लेकिन अस्पताल में सोया नागराज चीखकर उठ बैठा-
आऽऽह!
अरे! पुलिसवालों ने उस नागराज पर गोलियां चलाई हैं।
गोलियां उसको लगी हैं, लेकिन खून नागराज के शरीर से बहने लगा। यह हो क्या रहा है?

य... यह सब क्या हो रहा है डॉक्टर? मैं यहां पर कैसे आ गया?
डॉक्टर बासु जितना कुछ जानते थे, वह उन्होंने नागराज को बता दिया-
ओह! लेकिन यह तो मेरी ही केंचुली है। जरूर किसी ने तंत्र-विद्या का प्रयोग करके इसका ऐसा पुतला बना दिया है...
...जिसका संबंध मेरे शरीर से है। इस पर पड़ने वाली हर चोट का असर मेरे शरीर पर पड़ रहा है।
मुझे तुरन्त प्रिंसेस स्ट्रीट पहुंचकर इन लोगों को पुतले को नुकसान पहुंचाने से रोकना होगा। अगर इन लोगों ने किसी तरह से पुतले का कोई अंग काट डाला तो मेरा भी वह अंग कटकर जरूर गिर जाएगा।
केंचुली पर पुलिस वालों ने अपना वार कर लिया था। अब बारी मिस्टर केंचुली की थी-
धड़ाक
आई ऽऽऽ
पुलिस वाले बहुत तेजी से बेहोशी की दुनिया की तरफ रवाना हो रहे थे-
लेकिन मिस्टर केंचुली के रास्ते की एक बाधा बची हुई थी-
फेसलेस! ये यहां पर क्या कर रहा है?
ये 'जूडो ग्रिप' इस आफत को मेरे चंगुल से छूटने नहीं देगी।

धर- फेसलेस ने केंचुली की बांह कसकर मरोड़ी-
और नागराज के हाथ में दर्द की एक तेज लहर दौड़ गई। उसे नाग-रस्सी छोड़ देने पर मजबूर हो जाना पड़ा-
आ!
नागराज! तुम... तुम तो...
मुझे पता नहीं कि तुम यहां पर क्यों आए हो फेसलेस! लेकिन इसको छोड़ दो। मैं तुम्हें इसको नुकसान पहुंचाने नहीं दूंगा।
धम्म
या कह रहे हो नागराज? यह अपराधी है। इसने तुम्हारा धरकर गहनों की चोरी की है। हारा नाम बदनाम करने की कोशिश है। और तुम इसको छोड़ देने के कह रहे हो! पर क्यों?
यह मेरी ही केंचुली है फेसलेस! और तुम्हारे 'क्यों' का जवाब देने में जितना वक्त लगेगा, उतना वक्त मेरे पास नहीं है। छोड़ दो इसको!
JEWEL COAL
गराज अभी-अभी घायल था। मुझे लग रहा है कि राज का मस्तिष्क अभी भी तरह से जग नहीं पाया है। मैं की बात मानकर इसकी चुली को छोड़ नहीं सकती! झे बड़ा आश्चर्य हो रहा है राज कि तुम एक अपराधी तरफदारी कर रहे हो। लेकिन अपने शिकार को छोड़ नहीं सकता!
अपनी जीभ का इस्तेमाल मैं कर चुका! अब मैं तुमको अपने हाथ-पैरों से समझाऊंगा!

यह लड़ाई रोचक तो जरूर थी क्योंकि एक तरफ फेसलेस के पास दांव-पेंच थे-

तो दूसरी तरफ नागराज के पास असाधारण शारीरिक शक्ति थी-

लेकिन यह लड़ाई ज्यादा देर तक नहीं चल पाई-

क्योंकि नागराज को एक आश्चर्यजनक मदद मिल गई-
अरे! यह क्या? केंचुली ने फेसलेस पर पीछे से वार किया है लेकिन क्यों? यह मेरी मदद क्यों कर रहा है?
इसको तो अब तक भाग जाना चाहिए था।
धम्मम
यह अब भाग रहा है। यह जरूर मुझे खींचकर कहीं ले जाना चाहता है। यानी कोई जाल मेरा इंतजार कर रहा है।
लेकिन मैं इसका पीछा नहीं छोड़ सकता! मुझे पता करना ही पड़ेगा कि इस केंचुली को किसने ले जाकर इसमें जान डाली। और कैसे?
केंचुली पहले से ही तय योजना के अनुसार, शिप की तरफ बढ़ गया-
और दूसरी तरफ बेहोश मगराहा अभी तक समुद्र के पानी में ही तैर रहा था। लेकिन जहरीली फुंकार का असर धीरे-धीरे खत्म भी हो रहा था-
और शिप में- जुलू खुश भी था और चिंतित भी-
वेरी गुड! केंचुली नागराज को लेकर आ रहा है। अब मैं नागराज को समझा सकूंगा कि उसे मेरी गुलामी क्यों करनी पड़ेगी।
लेकिन यह मगराहा कहां मर गया। मुझे उसकी जरूरत पड़ सकती है।

नागराज की अपनी मंजिल पर पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा—
मेरी केंचुली उस जहाज पर चढ़ी है। यानी यही शिप मेरी यात्रा का अन्त है!
मुझे बहुत संभलकर अन्दर घुसना होगा। अगर यह कोई जाल है तो मुझे फंसाने का पूरा इंतजाम किया गया होगा!
लेकिन कहीं से कोई आवाज नहीं...
आह!
मेरा पैर! मेरे पैर में एकाएक बहुत तेज दर्द शुरू हो गया है!
कैसा महसूस हो रहा है, नागराज!
दर्द हो रहा है क्या?
कौन हो तुम?
अब तुमने पूछा है तो परिचय तो देना ही पड़ेगा। मैं तुम्हारा नया मालिक हूं नागराज! वैसे तो मेरा नाम जूलू है, लेकिन तुम मुझे 'सर' कहकर बुलाओगे।
ओह! लेकिन तुमको मेरा मालिक किसने बना दिया?

इसने! यानी तुम्हारी ही खाल ने!
जिसकी जांघ पर एक डंडा मारते ही तुम्हारे पैर में तेज दर्द शुरू हो गया था!
मेरी केंचुली! यानी तुमने ही इसका ऐसा पुतला बनाया है जिस पर पड़ने वाले हर वार से दर्द मेरे शरीर में होता है। लेकिन तुमने इसमें जान कैसे डाली?
उसी 'प्लाज्मा' को इसके अन्दर फिट करके, जिसको मगराहा ने अस्पताल से उठाया था, और मैं जिसे लेकर यहां पर आया था।
ओह! यानी मगराहा भी तुम्हारा ही आदमी है। तुम तो ऐसे अजीबो-गरीब प्राणी बनाने के एक्सपर्ट लगते हो!
कैसे बनाते हो तुम ऐसे प्राणी जुलू?
सबसे पहले तो मेरा नाम लेने की जुर्रत करने की सजा भुगतले नागराज...
धड़ाक
आऽऽह
और अब अपने सवाल का जवाब सुन ले! मेरा जन्म दक्षिणी अफ्रीका के एक कबीले में हुआ था। मेरा बाप उस कबीले का ओझा था। तंत्र-मंत्रों का बहुत बड़ा ज्ञानी। मेरा बचपन इन तंत्रों को खास तौर से 'वू-डू' विद्या सीखने में बीता। 'वू-डू' को तो तू जानता ही होगा। वह तंत्र जिससे किसी व्यक्ति का अभिमंत्रित पुतला बनाकर उस व्यक्ति को तड़पा-तड़पाकर मारते हैं।

वूडू कातो में विशेषज्ञ बन गया, लेकिन उसकी प्रेक्टिस करने का मुझे मौका नहीं मिल पाया। क्योंकि मेरा चाचा मुझे कबीले से निकालकर अपने साथ जोहानसबर्ग शहर ले आया। पढ़ाई में मैं काफी तेज था। कुछ ही साल बाद मेरा दाखिला 'मेडिकल स्कूल' में हो गया...
... और जब मैं पढ़ाई खत्म करके बाहर निकला तो कुछ ही सालों के अन्दर एक जाना माना बॉयोलाजिस्ट बन गया...
... लेकिन परंपरागत पढ़ाई मुझे कभी आकर्षित नहीं कर पाई। मेरे अन्दर हमेशा कुछ नया करने का जोश जोर मारता रहता था। ...
... इसीलिए मैंने अपनी खुद की लेबोरेट्री बनाई, जिसमें मैं नए-नए प्रयोग करने लगा।
मेरा सबसे पहला प्रयोग था इंसान और जानवर के संयोग से एक नया प्राणी पैदा करना! इसके लिए मैंने मगरमच्छ के शुक्राणुओं को एक महिला के गर्भ में प्रतिरोपित किया...
... प्रयोग सफल रहा। उस औरत को बेहोश करके ऑप्रेशन द्वारा उस शिशु प्राणी को निकालने के बाद मैंने उस औरत को बताया कि उसके मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ था!
और वह शिशु था मगराहा। कितना घृणित काम किया तुमने जुलू!
तूने फिर मेरा नाम लिया? खैर! वैसे तुम्हारा अंदाज सही है। मगराहा ही वह बच्चा था! इस प्रयोग में सफल होने से मेरा हौसला बढ़ गया। अब मैंने अपना ध्यान मुर्दे में जान डालने वाले प्रयोगों पर केन्द्रित कर दिया...
... इसमें मुझे काफी सफलता भी मिली। लेकिन जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग 'प्लाज्मा' मैं नहीं बना पाया।
इसीलिए जब मैंने 'मेडिकल जर्नल' में पढ़ा कि महानगर में 'प्लाज्मा' बना लिया गया है तो मैं तुरंत महानगर की तरफ रवाना हो गया।
लेकिन मैं यह भी जानता था कि महानगर में प्लाज्मा हासिल करने के लिए मुझे तुमसे टकराना ही पड़ेगा।

तेरी केंचुली के अन्दर कुछ जरूरी यंत्र फिट करके मैंने एक पुतला बनाया, और उसके अन्दर 'प्लाज्मा' का जार फिट करके, उस पुतले में जान फूंक दी।
अब यह पुतला एक चलता फिरता वूडू पुतला बन गया है। तेरा वूडू पुतला। इसी-लिए इस पर होने वाले हर वार का असर तेरे शरीर पर होता है!

अगर इसकी गर्दन कट गई तो तेरी गर्दन भी सलामत नहीं रहेगी...
इसीलिए अब तेरा एक ही काम है नागराज! अपनी केंचुली की हर पल रखवाली करना...

.. इससे मैं छोटे-छोटे काम करवाऊंगा, जैसे ब्रिटेन की महारानी के ताज से कोहिनूर हीरा उड़ाना, फोर्टनॉक्स से सोने की सिल्लियां लाना वगैरह... वगैरह!
और इन सब कामों में इसकी सुरक्षा करेगा तू! नागराज तू!

तो फिर तू मरने की तैयारी शुरू कर दे। शायद इस तैयारी से तेरा दिमाग बदल जाए!

अपने देखना बन्द कर दे जुलू! नागराज मर जाएगा, लेकिन ऐसे काम कभी नहीं करेगा!

आह! यह तो सचमुच केंचुली के जरिए, मेरी जान निकालने पर उतारू हो गया है!

इसको केंचुली के पास पहुंचने से रोकना होगा!

नागराज की कलाई से सांपों ने निकलकर पहले तो जुलू के हाथों से 'इलेक्ट्रिक रॉडों' को गिरा दिया–

हिस्स्स

स्स

स्स

और फिर केंचुली के शरीर की चारों तरफ से लपेटना शुरू कर दिया–

अब तू केंचुली को छू भी नहीं पाएगा जुलू!

और न ही केंचुली इस कैद से आजाद हो पाएगा!

मैं जानता था कि तू यह चाल चलेगा नागराज! इसका भी इन्तजाम मैंने कर रखा है।
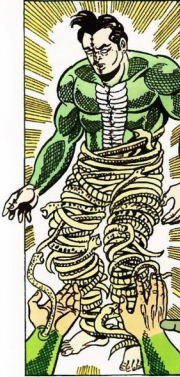
यह 'रिमोट' देख! यह केंचुली के पेट में फिट एक बम का रिमोट है नागराज

अब तू अपने नागों को अपने-आप वापस बुला ले। वर्ना मेरा यह रिमोट कंट्रोल केंचुली के पेट के बम को फोड़ देगा... और फिर तेरे पेट का क्या हाल होगा, यह तू खुद ही सोच ले!

ऐसा है, तो मुझे तेरे हाथ से ये रिमोट ले लेना चाहिए। कहीं घबराहट में तुझसे बटन दब गया तो गड़बड़ हो जाएगी।

नागराज की कलाइयों से कब सर्प निकले, और विद्युत गति से रिमोट, जुलू के हाथ से ले उड़े, यह जुलू नहीं देख पाया–

और अब मेरी हल्की विष-फुंकार तुझे बेदम कर देगी!

अब अगर तू चाहता है कि मैं तुझ पर तीव्र विष फुंकार न छोड़ूं तो मुझे इस केंचुली को निष्क्रिय करने का तरीका बता दे!

आह!

लेकिन इससे पहले कि जुलू, नागराज का प्रस्ताव स्वीकार या अस्वीकार कर पाता...

...रिमोट नागराज के हाथ से छूटकर दूर जा गिरा–

मगराहा! वाह! बड़े सही मौके पर आया है तू!...

... मार इसको! और इस बार यह तुझ पर अपनी विष फुंकार छोड़े तो सांस रोक लेना!

तड़ाक

तू मगर-मानव है! सांस को काफी देर तक रोके रख सकता है!

अब मैं रिमोट को अपने हाथ में ले लूं। पर... ये रिमोट गया कहां? कहीं नजर नहीं आ रहा है!...
...उसको ढूंढने में समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए। सबसे पहले केंचुली को सांपों के खोल से बाहर निकालना चाहिए।
LABORA
और उसके लिए मुझे लैब में जाना होगा!
जुलू लपककर लैब में घुस गया-
आहा! यह रहा मेरा वह 'केमिकल स्प्रे' जो सांपों की त्वचा में तेज जलन पैदा करता है। अब... अरे! ये दोनों लड़ते-लड़ते लैब में आ गए हैं। इनको जल्दी ही रोकना होगा।
वर्ना मेरी लैब पूरी तरह से तबाह हो जाएगी।
जुलू का डर सही था! दो शक्तिशालियों के वारों के बीच लैब की नाजुक चीजें घुन की तरह पिसी जा रही थीं-
इस पर मेरी सर्प सेना बेअसर है। और शायद विषदंश भी, क्योंकि इसकी खाल काफी मोटी लगती है। अब अगर यह शारीरिक शक्ति से काबू में नहीं आया तो विष फुंकार के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचेगा।
नागराज के लिए समय भी काफी कम बचा था-
क्योंकि उसका दूसरा दुश्मन भी आजाद हो रहा था-
हा हा हा! त्वचा में हो रही जलन से बचने के लिए कैसे तड़पकर भाग रहे हैं, नागराज के नाग!
शीघ्र ही केंचुली, सर्प बंधनों से आजाद था-

नागराज इस लड़ाई को जल्दी से जल्दी खत्म करना चाहता था–

यह तो जानवरों की तरह ही बिना थके लड़ता जा रहा है। अब इसको विष फुंकार से ही रोकना होगा। मैं इस पर विष फुंकार की तीव्र धारें लगातार मारता ही जाऊंगा! ...

लेकिन सांस न लेने पर भी नतीजा वही निकलना था–

नागराज ने अपनी युक्ति से मगराहा को लगभग परास्त कर ही दिया था–

लेकिन तभी- नागराज की सांस खुद ही रुक गई–

अरे! अरे! यह क्या हो रहा है?

एकाएक मेरा दम क्यों घुटने लगा है?

इसलिए नागराज क्योंकि मैंने तेरे जुड़वें की गर्दन दबा रखी है।
इसका दम घुट रहा है, तो जाहिर है कि तेरा दम भी घुटेगा।
ओह! केंचुली आजाद हो गया! और तू फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो गया जुलू!
इस बार तेरा कुछ लम्बा इंतजाम करना पड़ेगा। इस 'फन फालिज सर्प' के विषदंश से तेरे हाथ-पैर कुछ समय के लिए लकवाग्रस्त से हो जाएंगे!
कच
आह!
लेकिन अब तक मगराहा, जुलू की इस हरकत से सीख ले चुका था। उसका हाथ केंचुली से जा टकराया, और नागराज चीख उठा—
धाड़
आ ऽ ह
और इससे पहले कि नागराज संभल पाता—

मगराहा का वार उसके बदन से आ टकराया-
धम्मम्मम्मम्म
आ ह!
यह तो मुझ पर दो तरफ से वार कर रहा है। मुझे संभलने का मौका ही नहीं दे रहा है।...
...और जब तक मैं संभल नहीं जाता तब तक मैं पलटकर वार नहीं कर सकता।...
...इस वक्त अगर किसी तरह से मगराहा को एक सेकंड के लिए भी कोई रोक सके तो...
नागराज ने शायद सच्चे मन से यह इच्छा की थी-
क्योंकि अगले ही पल मदद हाजिर हो गई-
खटाक
फेसलेस! तुम कहां से आ गए?

वहीं से, जहां से तुम आ रहे हो नागराज! मैंने तुम्हारा पीछा किया था। और जब तुम थोड़ी देर तक शिप से बाहर नहीं आए...
... तो मैंने अन्दर आने का इरादा बना लिया।
तड़ाक
अब इस मगरमच्छ के आंसू तो मैं निकलवा लूंगा...
... तुम अपना ध्यान अपनी केंचुली को नष्ट करने में लगाओ।
धाड़
फेसलेस, मगराहा को उलझाकर लैब से बाहर खींच लाया-
और लैब में रह गए नागराज, केंचुली और जुलू-
अब इस केंचुली को निष्क्रिय करना ज्यादा मुश्किल काम नहीं होना चाहिए...
... इसको एक बार फिर सांपों के कवच में कैद कर देता हूं। इस बार जुलू भी इसकी कोई मदद नहीं कर पाएगा।
नागराज के पहले सर्प-वार को केंचुली बचा गया-

लेकिन दूसरा वार होने से पहले ही जुलू चिल्ला उठा-
केंचुली! अपने हाथ, मशीनों पर मार! मारता जा!
अगले ही पल- केंचुली ने अपने हाथ लोहे पर पटक दिए-
और नागराज एक बार फिर चीख उठा-
आह!
आऽऽऽह!
मुझे अपने हाथों की हड्डियां टूटती सी महसूस हो रही हैं। यह मुझे तड़पा-तड़पाकर मारना चाहता है!
और मैं इसको खत्म नहीं कर सकता। क्योंकि इसकी जान 'प्लाज्मा' इसके पेट के अन्दर बन्द है, जिसको पेट फाड़कर ही निकाला जा सकता है!
और इसका पेट फाड़ने से मेरे पेट की क्या हालत होगी, यह कोई मूर्ख भी समझ सकता है।
अगर किसी तरह से मैं 'प्लाज्मा' को नष्ट कर सकता तो... एक मिनट! प्लाज्मा को मैं नष्ट कर सकता हूं!
और इसमें मेरी मदद करेगा, यह ज्वलनशील एसिड!
तड़ाक
INFLAM
नागराज के एक ही वार से जार, ऊपर से नीचे आ गिरा-
तड़
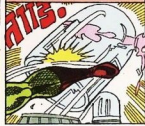
और एसिड ने केंचुली के शरीर को भिगो डाला—
यह तूने क्या किया नागराज? यह एसिड तेरी केंचुली को गला डालेगा, और साथ ही साथ तेरा शरीर भी गल जाएगा!
तू गलकर मरना चाहता है क्या?
मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं है जुलू! मैं तो अपनी केंचुली का अग्नि से क्रिया-कर्म करना चाहता हूँ।
'इलेक्ट्रिक-स्पार्क' की एक चिंगारी ने एसिड को सुलगा दिया—
यानी तू गलकर नहीं जलकर मरना चाहता है। तेरी इच्छा!
मर!
धनाक
ज्वलनशील एसिड के कारण देखते ही देखते आग की लपटों ने केंचुली को पूरी तरह से घेर लिया—
आह!
और साथ ही साथ नागराज भी कराह उठा। उसके शरीर में भी तेज जलन होने लगी थी—
यह क्या किया था नागराज ने? मौत को खुद बुलाकर ले आया था नागराज!

केंचुली को आग की लपटें अपने अंदर लीलती चली गईं-
और नागराज के शरीर की जलन भी बढ़ती गई-
?
उफ़!
लेकिन जब केंचुली पूरी तरह से भस्म होकर राख बन गई-
तो नागराज तब भी सही-सलामत था-
यह क्या नागराज? तुम्हारी केंचुली जल गई, लेकिन तुम फिर भी सही-सलामत हो! कैसे?
पहले तुम बताओ कि मगरहा कहां गया?
मुझ पर छलांग लगाते-लगाते वह खुद पानी में जा गिरा।
अब बताओ, तुम कैसे बच गए?
बताओ, बताओ! यह तो मैं भी जानने को बेताब हूं।
बस इतना समझ लो जुलू कि मैंने एक तुक्का लगाया था, जो तीर बन गया। अचूक तीर!
हालांकि यह बात पूरी तरह से सच नहीं है।...
...मेरी जान डॉक्टर बासु की एक बात ने बचा ली। उन्होंने मुझे बताया था कि प्लाज्मा को सिर्फ 'चुंबकीय क्षेत्र' में ही बनाए रखा जा सकता है। अगर चुंबकीय क्षेत्र नहीं होगा, तो प्लाज्मा भी खत्म हो जाएगा।
और चुंबक की दुश्मन है गर्मी! गर्म करने में चुंबक भी अपना चुंबकीय बल खोकर सिर्फ लोहे का एक टुकड़ा रह जाता है!
मैंने वही किया। केंचुली के शरीर में लगी आग ने 'प्लाज्मा जार' के चुंबकीय क्षेत्र को नष्ट कर दिया था और प्लाज्मा भी खत्म हो गया। और जब इस पुतले में जान ही नहीं रही, तो इसका मुझसे संबंध भी खत्म हो गया!

लेकिन यह बात डॉक्टर बासु ने मुझे राज के रूप में बताई थी। अगर यह बात मैं इनको बताऊंगा तो मेरा राज के रूप का राज खुलने का खतरा पैदा हो जाएगा।
क्या सोच रहे हो नागराज? उधर देखो!
आग तो फैलती ही जा रही है।
अरे! हम सब मारे जाएंगे। पेट्रोल टैंक ठीक इसी लैब के नीचे है।
लेकिन किसी की जान को भी खतरा नहीं हुआ–
सभी शिप से कूद पड़े–
और उसी पल शिप फट पड़ा–
विस्फोट के धक्के से जुलू, नागराज के हाथों से छूटकर दूर जा गिरा–
तुम ठीक तो हो न फेसलेस?
मैं तो ठीक हूं नागराज! लेकिन जुलू और मगराहा कहीं नजर नहीं आ रहे हैं।
वे दोनों बच तो गए ही हैं।...
...और अगर वे जिन्दा रहे तो मेरी एक न एक दिन उनसे मुलाकात जरूर होगी।
जुलू का भी यही इरादा था–
तूने मेरा बहुत नुकसान कर दिया नागराज! लेकिन एक न एक दिन मैं तुझसे हर्जाना जरूर वसूलूंगा।
सूद समेत!
समाप्त.